कृष्ण ने सीखा गुरुचरणों में

जीवन धर्म का वह ज्ञान

जिससे वे स्वयं जगद्गुरु बन गये

पांच महान् साधनाएं

जिन्हें सांदीपन ने कृष्ण को स्वयं सम्पन्न कराया

कृष्ण इस शब्द के कानों में गुञ्जरित होते ही आंखों के सामने एक ऐसा बिम्ब उभर आता है, जो अद्वितीय एवं तेजस्वी है, एक ऐसा व्यक्तित्व साकार हो उठता है, जो पौरुषता का पर्याय ही है एवं जो समस्त ब्रह्माण्ड का साकार पुञ्ज है।

समस्त विश्व के इतिहास में शायद ही कभी ऐसा व्यक्तित्व पैदा हुआ हो, जो एक ओर तो पूर्ण प्रेमी था, पूर्ण भौतिक जीवन जीने वाला राजा था, तो दूसरी तरफ उच्चकोटि का योगी भी था, ब्रह्ममय था, जिसके चरणों में श्रेष्ठतम ऋषि-मुनि भी बैठ कर गद्-गद् हो उठते थे।

॥सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज॥

॥ यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति॥

मैं घोषणा करता हूं कि सब धर्मों को त्याग मेरी शरण में आ जाओ और जो मुझे सब ओर देखता है उसकी मैं सब प्रकार से रक्षा करता हूं।

क्या ये शब्द कोई सामान्य व्यक्ति बोल सकता हैं? क्या इस तरह के चैलेंज युक्त शब्द कोई बोलने की हिम्मत कर सकता है?

- नहीं।

यह तो केवल वही कह सकता है, जिसके सीने में एक ज्वाला हो, एक चिंगारी हो, जो पूर्ण पुरुष हो एवं जिसने ब्रह्म को पूरी तरह अपने में आत्मसात किया हो।

परन्तु कृष्ण इस श्रेष्ठ भावभूमि पर पहुंचे कैसे?

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

द्वापर युग के सूत्रधार कृष्ण का जब उपनयन संस्कार किया गया, तो उनके कुलगुरु महर्षि गर्ग इस विषय पर चिंतित थे, कि कृष्ण को किस गुरु के पास भेजा जाय, जिससे किं वे अनुपम बन सकें। हालांकि वे स्वयं उच्चकोटि के योगी थे, परन्तु वे इस बात से भी अनभिज्ञ न थे, कि यदि कृष्ण को युगपुरुष बनाना है, यदि कृष्ण को इतिहास पुरुष बनाना है, यदि कृष्ण को सोलह कला पूर्ण व्यक्तित्व बनाना है, तो उन्हें मुझसे भी श्रेष्ठ गुरु के पास जाना होगा ... और

वे जानते थे, कि उस काल में महर्षि सांदीपन, जो उज्जयिनी के पास रहते थे, सबसे अधिक सामर्थ्यवान और योग्य गुरु थे। अतः कृष्ण को सांदीपन ऋषि के पास ही शिक्षा-दीक्षा के लिए भेजा गया ...

भगवान महाकाल की नगरी उज्जयिनी ....
कल-कल बहती क्षिप्रा
सर्वत्र गूंजती मंत्र ध्वनि ...
यज्ञों का उठता हुआ धूम्र
स्वाहा राग ध्वनि ...
वेदों की ऋचाओं का गान और इसी क्षिप्रा के तट पर
महर्षि सांदीपन का आश्रम

सांदीपन ऋषि का स्वरूप उन्नत भाल, लहराती हुई दाढ़ी, तपस्या से तप्त स्वर्ण समान मुख आखों में सूर्य का तेज और एक दिन प्रातः गुरु सांदीपन अपनी दैनिक साधना से निवृत्त होकर अपनी कुटिया से बाहर आते हैं तो उनके सामने खड़ा होता है, एक बालक जो विन्रम भाव से दण्डवत् प्रणाम करता हुआ गुरु के चरणों में समर्पित हो जाता है। गुरु सांदीपन कहते हैं - बालक उठो, कहां से आए हो और क्या परिचय है तुम्हारा? बालक कृष्ण उठकर के सिर झुका कर अपना परिचय देते हुए कहते हैं - मैं यदु कुल का एक बालक राजा वासुदेव और देवकी का पुत्र, गोकुल वृंदावन से आपके चरणों में आया हूं। आप ही मेरे गुरु हैं। आप ही मुझे दीक्षा प्रदान कर सकते है।

ऋषि सांदीपन कृष्ण को एक टक देखते रहे। कृष्ण की नजरें झुकी हुई थीं। सांदीपन मन ही मन मुस्कुराए लेकिन अपने-आप को पर नियंत्रित करते हुए थोड़ी तेज आवाज में बोलते हैं -

हे बालक यहां किस लिए आए हो?

क्या वृंदावन मथुरा से उज्जयिनी के बीच में कोई ऋषि मुनि नहीं है?

क्या तुम्हारे माता-पिता ने तुम्हारी शिक्षा की उचित व्यवस्था नहीं की है?

यहां तुम यदु वंश के राजकुमार के रूप में आए हो या एक शिक्षार्थी के रूप में आए हो?

और क्या तुम्हारे कोमल हाथ, कोमल काया गुरुकूल की मर्यादा निभाने में समर्थ है?

क्या तुम चार दिनों में ही पुनः लौट तो नहीं जाओगे?

और सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि तुम्हारे जीवन का लक्ष्य क्या है?

कृष्ण ने धीरे से अपना सिर ऊपर उठाया और गुरु के नेत्रों में देखते हुए बोला - **"हे! गुरुदेव मैं यदु वंश का राजकुमार अवश्य हूं क्योंकि मेरे पिता राजा वसुदेव हैं मुझे जीवन में राजधर्म निभाना है और मैं अपने माता-पिता को बताकर ही अपने दोनों पैरों से चलकर मथुरा से उज्जयिनी आया हूं और मैं आपके पास ज्ञान प्राप्ति के लिये आया हूं और ऐसा ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूं जो अपने आप में विलक्षण हो। मुझे कुछ बनना है और मैं बनूंगा तो अद्वितीय ही बनूंगा। मैं अपने मुख से आपकी महिमा के बारे में क्या बोलूं। आप तंत्र में, मंत्र में, योग में, दर्शन में, मीमांसा में सर्वश्रेष्ठ हैं और मैं अपने जीवन में सर्वश्रेष्ठ बनना चाहता हूं और एक पूर्ण सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति ही मुझे ये विद्याएं प्रदान कर सकता है।"**

इतिहास साक्षी है कि सांदीपन ने कृष्ण से सब प्रकार की सेवाएं करवाकर, उनसे आश्रम के सभी प्रकार के कार्यक्रम सम्पन्न कराए। सांदीपन ऋषि ने गरीब बालक सुदामा और कृष्ण में भी कोई भेद नहीं रखा और जब परीक्षा लेते-लेते कृष्ण में वह सर्मपण, श्रद्धा, विश्वास आ गया, मन में कोमलता, देह में कठोरता, समाहित हो गई तो गुरु ने कहा कि अब तुम तैयार हो उन साधनाओं के लिये जिन्हें प्राप्त कर

प्रार्थना में हम यह अवश्य कहते हैं कि गुरु ही ब्रह्मा हैं, गुरु की विष्णु हैं, गुरु ही रुद्र हैं लेकिन क्या वास्तविक जीवन में हम गुरु के प्रति भक्ति, प्रीति पूर्णरूप से सम्पन्न करते हैं? क्या हम श्रद्धा और विश्वास के साथ अपने आप को पूर्ण रूप से समर्पित करते हैं? इतिहास की यह घटना जिसमें योगेश्वर श्रीकृष्ण ही नतमस्तक होकर गुरु से ज्ञान प्राप्त करते हैं। यदि त्रेता युग में भगवान राम वशिष्ठ और विश्वामित्र के प्रति पूर्ण समर्पण, श्रद्धा भाव से शिक्षा-दीक्षा ग्रहण कर सकते हैं, द्वापर युग में श्री कृष्ण अपने गुरु सांदीपन के आश्रम में भी यही क्रिया सम्पन्न करते हैं, तो इस कलियुग में एक शिष्य गुरु से ज्ञान क्यों नहीं प्राप्त कर सकता है? गुरु ही अक्षय चेतना का वह पुंज है। जो शिष्य के भीतर ज्ञान का प्रकाश फैला देता है और उसे अपने ही अनुरूप श्रेष्ठतम् बना देता है। इसीलिये शास्त्र कहते हैं -

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णाद पूर्णमुदच्यते
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवा व शिष्यते

तुम अपने जीवन का अर्थ समझ सकते हो। तुम अद्वितीय बन सकते हो। संसार में कृष्ण एक ही होगा और कृष्ण का यही उद्देश्य था, एक ही लक्ष्य था कि मैं जीवन भर कर्म करता रहूं तथा उस ज्ञान को प्राप्त करूं जो संसार में अनिर्वचनीय हो, संसार का श्रेष्ठतम योद्धा बनूं। ऐसा नीति पुरुष बनूं जो योग विद्या से संसार को विजित कर सके।

और यहीं से शुरु हुआ इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय ... शिष्य को एक श्रेष्ठ गुरु मिल गया था, तो गुरु को भी योग्यतम शिष्य प्राप्त हुआ... जहां गुरु ने कुछ सिखाने में न्यूनता नहीं बरती, शिष्य ने भी ग्रहण करने में शिथिलता नहीं दिखाई... और परिणाम यह हुआ, कि वह सामान्य सा बालक उस उच्चतम शिखर पर पहुंच गया, कि आज करोड़ों लोगों के द्वारा वह पूजा जाता है, हजारों मंदिरों में उसकी आरती होती है।

यह सब संभव हो सका उन अद्वितीय, गोपनीय साधनाओं से, जो सांदीपन ने कृष्ण को सम्पन्न कराई। उन्होंने कठिन से कठिन परीक्षाओं के द्वारा कृष्ण को कई बार परखा, हर बार कृष्ण कसौटी पर खरे उतरे।

सांदीपन ने उन्हें ऐसी दिव्य सिद्धियां प्रदान की, जिसके द्वारा कृष्ण कभी भी जीवन में पराजित नहीं हुए, हमेशा चिरयौवनवान और सम्मोहक बने रहे, पूर्ण सम्पन्नता एवं वैभव प्राप्त कर सके और वे समस्त विश्व में जगद्गुरु के नाम से विख्यात हुए।

हालांकि ये सिद्धियां अत्यन्त गोपनीय हैं एवं ग्रंथों के अनुसार तो इन्हें अपने पुत्र को भी नहीं देना चाहिए, फिर भी गुरु-शिष्य परम्परा के द्वारा आज भी ये साधनाएं सुरक्षित हैं। सर्वजन हिताय के उद्देश्य से ये साधनाएं पत्रिका में पुनः एक बार प्रकाशित की जा रही हैं।

अतः आप सबको इन अत्यन्त दुर्लभ साधनाओं का लाभ उठाना चाहिए और भूल कर भी किसी दुर्जन व्यक्ति को इन्हें नहीं बताना चाहिए। साधना तो व्यक्ति एवं समाज के योग-क्षेम के लिए होती है, अतः इनका उपयोग अच्छे कार्यों के लिए ही होना चाहिए।

अब नीचे कुछ ऐसी साधनाएं प्रस्तुत हैं, जो कृष्ण ने क्षिप्रा नदी के तट पर सांदीपन आश्रम में अपने गुरु की कृपा से हस्तगत की थीं।
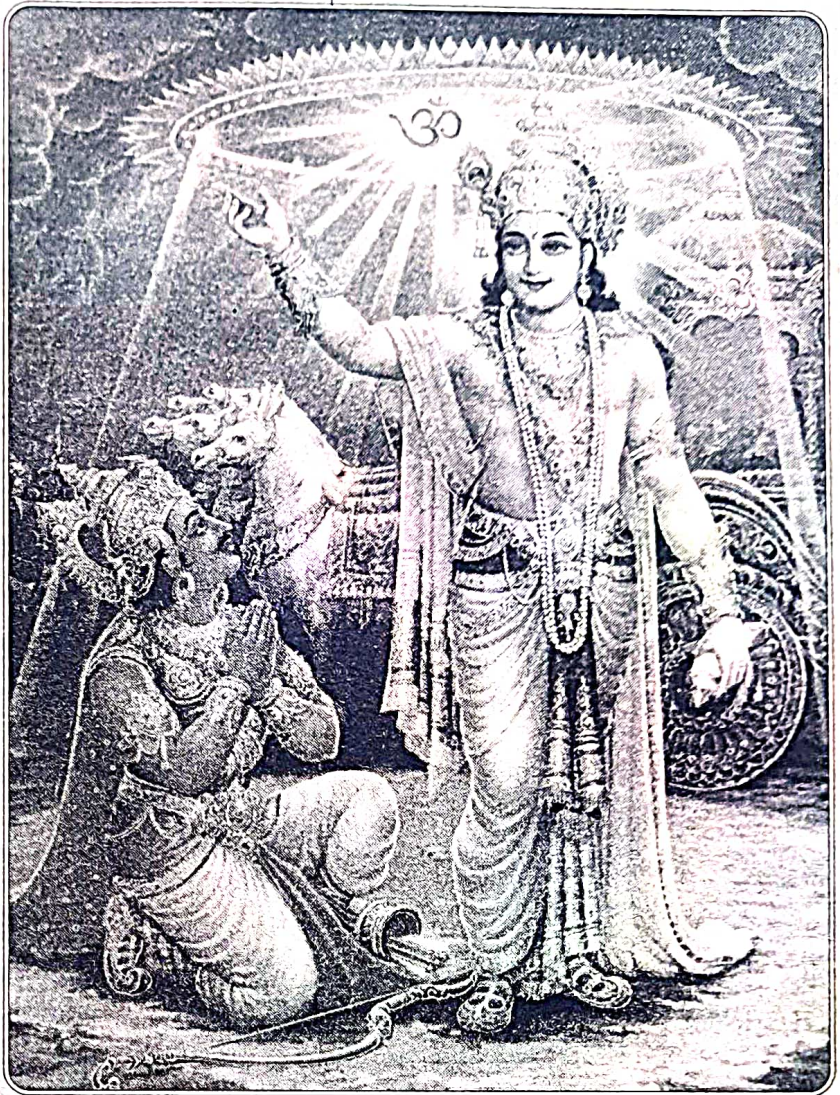
1. सुदर्शन प्रयोग – शत्रु बाधा निवारण हेतु

यह अत्यन्त उच्चकोटि का प्रयोग है और कहते हैं, कि आज तक केवल गिने-चुने योगी ही इस प्रयोग को सम्पन्न कर सफलता प्राप्त कर पाये हैं। यह प्रयोग अत्यन्त ही तीक्ष्ण, प्रभावकारी एवं तीव्र है, अतः गुरु आज्ञा प्राप्त कर ही इसका प्रारम्भ करना चाहिए।

जो जीवन में शत्रुओं से परेशान हों, दुश्मनों ने उसका जीना हराम कर दिया हो, उनके सामने सिर झुकाना पड़ता हो या मुकदमों अथवा रोगों से जूझते हुए जर्जर हो गए हों, तो यह प्रयोग अत्यन्त ही लाभकारी सिद्ध होता है।

शब्दों में इस बात को बताना संभव नहीं, पर फिर भी इतना कहना पर्याप्त है, कि जिस दिन से व्यक्ति इस साधना को प्रारम्भ करता है, उसी क्षण से उसे अनुकूल प्रभाव प्राप्त होने लग जाता है।

साधना सिद्ध होने पर व्यक्ति का व्यक्तित्व ही परिवर्तित हो जाता है, उसके चेहरे पर इतना तेज व्याप्त हो जाता है, कि

सामने वाला व्यक्ति देखते ही समर्पण की मुद्रा में आ जाता है। वह सभी मुकदमों में विजित होता है, शत्रु खुद गिड़गिड़ा कर उसके पैरों में पड़ जाता है और समझौता कर लेता है। समर-भूमि में ऐसा व्यक्ति महाकाल के समान शत्रुओं का दमन करने वाला होता है, परन्तु वह खुद सुदर्शन चक्र रूपी विद्युतीय कवच से आबद्ध रहता है, इसलिए शत्रु के अस्त्र-शस्त्र उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ पाते।

रोग तो ऐसे साधक के जीवन को स्पर्श भी नहीं कर सकते और वह स्वस्थ, आरोग्य जीवन जीता हुआ समाज में मान-सम्मान का अधिकारी होता है।

साधना विधान

इसके लिए साधक को **किसी भी शुक्रवार** को रात्रि 11 बजे के बाद स्नान कर शुद्ध सफेद वस्त्र धारण करना चाहिए। सामने बाजोट पर सफेद वस्त्र पर '**सुदर्शन चक्र यंत्र**' को स्थापित करें और फिर उसका पंचोपचार पूजन करें। उसके बाद यंत्र के दाहिनी ओर '**सुदर्शन तरंग गुटिका**' को स्थापित करें। गुटिका का भी लघु पूजन करने के उपरान्त '**विजयदर्शिनी माला**' से निम्न मंत्र का ग्यारह माला मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ ॐ सुदर्शन चक्राय मम सर्व कार्य विजयं देहि देहि ॐ फट् ॥

यह ग्यारह दिन की साधना है। साधक को पूर्वाभिमुख हो कर बैठना चाहिए, प्रतिदिन एक ही समय पर साधना प्रारम्भ करें। ब्रह्मचर्य, अक्रोध आदि का पालन आवश्यक है।

साधना समाप्त करने के उपरान्त '**सुदर्शन तरंग गुटिका**' को अपने शरीर के ऊपर से घुमा कर दक्षिण दिशा में अपने घर से दूर फेंक दें। यंत्र व माला को लाल कपड़े पर पूजा कक्ष में स्थापित कर दें और 21 दिनों के बाद उसे भी किसी नदी या सरोवर में विसर्जित कर दें।

ऐसा करने से यह साधना सिद्ध हो जाती है, जिसके उपरान्त व्यक्ति हर क्षेत्र में विजय प्राप्त करता है और जीवन में किसी भी क्षेत्र में उसे पराजय का मुंह नहीं देखना पड़ता। कृष्ण स्वयं इस साधना के बलबूते पर ही कभी किसी के द्वारा पराजित नहीं हुए।

साधना सामग्री - 275/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

2. अक्षुण्ण लक्ष्मी साधना प्रयोग

यह प्रयोग अत्यन्त गुप्त है और शायद ही किसी योगी को इसका ज्ञान हो। **श्रीयंत्र स्थायी-लक्ष्मी के लिए श्रेष्ठ माना जाता है, पारदेश्वरी लक्ष्मी भी इस विषय में अत्यन्त लाभकारी है, परन्तु अक्षुण्ण लक्ष्मी साधना प्रयोग इनका भी सिरमौर है,** क्योंकि जो व्यक्ति इस साधना को सम्पन्न कर लेता है, तो चाहे उसने दरिद्र के घर में ही जन्म लिया हो, चाहे ब्रह्मा ने उसके भाग्य में सात जन्मों के लिए दरिद्रता ही क्यों न लिख दी हो, वह जीवन में तीव्र गति से उन्नति की ओर गतिशील होता जाता है, धन स्वतः ही उसकी ओर खिंचा चला आता है और उसके घर में षोडश लक्ष्मी चिर निवास करती है।

सांदीपन ने यह साधना सम्पन्न कराने से पूर्व कृष्ण को कहा था - **''हे कृष्ण! इस पृथ्वी पर धनवान व्यक्ति ही जीवित और पूजनीय है, दरिद्र व्यक्ति तो अपनों के द्वारा भी प्रताड़ित एक मृतप्राय व्यक्ति की भांति होता है, इसलिए कृष्ण! धनवान बनो।''**

इस साधना को सम्पन्न करने के बाद कृष्ण तीनों लोकों के अधिपति बन सके और उस युग में उनके समान सम्पत्तिवान शायद ही कोई व्यक्ति हुआ हो।

साधना विधान

यह साधना **किसी भी बुधवार** से प्रारम्भ की जानी चाहिए। साधक को रात्रि 10 बजे के बाद स्नान कर पीत वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुख कर पीले आसन पर बैठना चाहिए। सामने पीले वस्त्र से ढके बाजोट पर '**अक्षुण्ण लक्ष्मी महायंत्र**' स्थापित कर उसका पंचोपचार पूजन करना चाहिए। फिर '**त्रिलोक सम्पत्ति मुद्रिका**' को यंत्र के वाम (बायें) भाग की ओर स्थापित कर उसका भी संक्षिप्त पूजन करना चाहिए। उसके उपरान्त साधक को '**धनवर्षिणी माला**' से निम्न मंत्र का 15 माला मंत्र जप सम्पन्न करना चाहिए -

मंत्र

॥ ॐ अक्षणा त्रैलोक्य सम्पदा प्राप्त्यर्थं हुं हुं फट् ॥

यह साधना सात दिनों की है, जिसके उपरान्त व्यक्ति को 13 दिन तक यंत्र, माला तथा मुद्रिका को पूजा स्थान में रख देना चाहिए। फिर 13 दिन के बाद मुद्रिका, माला व यंत्र को नदी में प्रवाहित कर देना चाहिए।

ऐसा करने से साधना में सफलता प्राप्त होती है और रही अनुभव की बात, तो वह आप स्वयं देख सकते हैं।

साधना सामग्री - 290/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

3. सूर्य सम्मोहन साधना

एक बार कृष्ण गुरु सांदीपन के चरण दबा रहे थे, कि अचानक जंगल की ओर से एक हिरण दौड़ता हुआ उस ओर आ पहुंचा। उस के पीछे-पीछे विशाल व्याघ्र था, जिसके शरीर में साक्षात् यम ही मानो उस हिरण को लीलने के लिए व्यग्र था। परन्तु अचानक यह क्या ... गुरु सांदीपन के प्रभाव क्षेत्र अर्थात् उनके आश्रम में आते ही व्याघ्र अपनी हिंसा भूल गया, हिरण अपना भय भूल गया और वे दोनों वैर-भाव भूल कर परस्पर क्रीड़ा करने लगे। कृष्ण तो मानो कुछ क्षण के लिए स्तब्ध हो देखते ही रह गए। पूछने पर गुरु सांदीपन ने बताया - यह सब '**सूर्य सम्मोहन साधना**' से ही सम्भव हो सका है। किसी भी जीवन को उसकी प्रकृति के विपरीत कर देना कोई सरल कार्य नहीं हैं, अपितु दुष्कर कार्य है।

फिर उन्होंने कहा - "**कृष्ण! तुम्हें अपने जीवन में अनेक विपरीत परिस्थितियों से गुजरना पड़ेगा, जब समस्त लोग तुम्हारे खिलाफ हो जायेंगे, अतः यह साधना तुम्हें सम्पन्न करनी ही है, जिससे कि तुम सबको अपने अनुकूल बनाने में समर्थ हो सकोगे।**"

इसके बाद सांदीपन ने कृष्ण को यह साधना सम्पन्न कराई, जिसके बलबूते पर जीवन्त वस्तुएं तो क्या, जड़ वस्तुएं भी उनके आकर्षण पाश में बंध जाती थीं। एक बार जो उन्हें देखता था, बस देखता ही रह जाता था और कभी उनकी इच्छा के विपरीत कार्य नहीं कर पाता था। गोपियां तो कृष्ण के प्रेम में पागल ही हो गई थीं।

साधना विधान

यह साधना 11 दिनों की है। इसके लिए साधक को किसी भी **रविवार को रात्रि** दस बजे के उपरान्त स्नान कर सफेद वस्त्र धारण कर सफेद आसन पर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठना चाहिए।

फिर सामने सफेद वस्त्र से ढके बाजोट पर '**सूर्य सम्मोहन यंत्र**' स्थापित कर उसका पंचोपचार पूजन करें और उसके पास ही '**माणिक्य माला**' को स्थापित कर उसका भी पूजन कर घी का दीपक लगायें। फिर इसी माला से निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं सूर्य सम्मोहय ह्रीं ॐ ॥

11 दिन बाद यंत्र और माला को किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर दें। साधना के दौरान प्रतिदिन इसी मंत्र के द्वारा उगते सूर्य को जल चढ़ाना चाहिए।

ऐसा करने से साधना पूर्ण होती है और साधक को अपने व्यक्तित्व में आश्चर्यजनक परिवर्तन अनुभव होता है। उसमें गजब का आकर्षण एवं सम्मोहन आ जाता है और वह प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है। सभी जड़-चेतन पदार्थ उसके प्रति आकर्षित हो जाते हैं और सदैव उसके अनुकूल रहते हैं।

इन साधनाओं को सम्पन्न कर आप स्वयं अनुभव करेंगे, कि ये कितनी अद्वितीय हैं, कितनी श्रेष्ठ हैं।

साधना सामग्री - 285/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

4. इच्छा पूर्ति गोविन्द प्रयोग

इस साधना हेतु साधक शुक्रवार रात्रि का प्रथम प्रहर बीत जाने के पश्चात् साधना क्रम प्रारम्भ कर अर्द्धरात्रि के साथ पूर्ण मंत्र जप सम्पन्न करें, इस साधना हेतु "**इच्छा पूर्ति गोविन्द यंत्र**", "**दो गोविन्द कुण्डल**" तथा "**आठ शक्ति विग्रह**" आवश्यक हैं।

अपने सामने सर्वप्रथम बाजोट पर पुष्प ही पुष्प बिछा दें और उन पुष्पों के बीचों बीच '**इच्छा पूर्ति यंत्र**' स्थापित करें,

तथा इस यंत्र को पूजन केवल चंदन तथा केसर से ही सम्पन्न करें, अपने सामने कृष्ण का एक सुन्दर चित्र फ्रेम में मढ़कर स्थापित करें, चित्र पर तिलक करें तथा प्रसाद स्वरूप पंचामृत हो, जिसमें घी, दूध, दही, शक्कर तथा शहद हो। इसके अतिरिक्त अन्य नैवेद्य भी अर्पित कर सकते हैं, इच्छा पूर्ति यंत्र के दोनों ओर '**गोविन्द कुण्डल**' पर केसर का टीका लगायें और दोनों हाथ जोड़कर कृष्ण भगवान का ध्यान करें, कृष्ण का ध्यान कर इनके शक्ति स्वरूप आठ विग्रह स्थापित करें, ये आठ शक्तियां **लक्ष्मी, सरस्वती, रति, प्रीति, कीर्ति, कान्ति, तुष्टि** एवं **पुष्टि** हैं, प्रत्येक शक्ति विग्रह को स्थापित करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

ॐ लक्ष्म्यै नमः पूर्वदले, ॐ सरस्वत्यै नमः आग्नेय दले, ॐ रत्यै नमः दक्षिणदले, ॐ प्रीत्यै नमः नैर्ऋत्यदले, ॐ कीर्त्यै नमः पश्चिम दले, ॐ कान्त्यै नमः वायव्यदले, ॐ तुष्टयै नमः उत्तरदले, ॐ पुष्टयै नमः ईशान दले।

शक्ति पूजन के पश्चात् इच्छा पूर्ति मंत्र का जप प्रारम्भ किया जाता है, इसकी भी विशेष विधि है, इसमें अपने दोनों हाथों में एक पुष्प अथवा पुष्प की पंखुड़ी लें, और इच्छा पूर्ति मंत्र का उच्चारण करते हुए उसे अर्पित कर दें।

॥ ॐ श्रीं क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय ह्रीं ॐ स्वाहा॥

इस प्रकार 108 बार यह मंत्र उच्चारण इसी विधि से सम्पन्न करना है, यह अर्पण प्रयोग पूर्ण हो जाने के पश्चात् पहले से जला कर रखे हुए दीप, अगरबत्ती तथा धूप से आरती सम्पन्न कर प्रसाद ग्रहण करें।

यदि साधक एक महीने तक प्रतिदिन एक माला मंत्र जप सम्पन्न करें, तो उसका इच्छित कार्य अवश्य ही सम्पन्न हो जाता है।

साधना सामग्री पैकेट - 330/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

5. बल वृद्धि महाबाहु प्रयोग

संसार में शक्तिहीन हो करके जीना दुर्भाग्य का पर्याय है, चाहे वह समाज में हो या परिवार में हो उसका निरन्तर तिरस्कार होता है क्योंकि शक्तिहीन व्यक्ति का भाग्य भी साथ नहीं देता। दैवो दुर्बल घातकः इस युक्ति के अनुसार कमजोर होना एक शाप हे इसलिए शारीरिक शक्ति से, विद्या शक्ति से, धन शक्ति से और जन शक्ति से हमें सम्पन्न होने का निरन्तर प्रयास करना चाहिए। जिससे समाज में, परिवार में या विश्व में मस्तक ऊंचा करके सम्मान पूर्वक जी सकें क्योंकि शक्तिहीन होकर तिल-तिल जीने के बजाय शक्ति सम्पन्न बनकर कुछ दिन जीना ही श्रेष्ठ है। यदि किसी कारणवश आप शारीरिक शक्ति से रहित हैं, कमजोर हैं, बलहीन हैं और असम्मान की निरन्तर यदि सम्भावना बनी रहती है उस स्थिति में इस श्रेष्ठ प्रयोग को अवश्य करना चाहिए जिससे आप का जीवन उदात्त और सुखमय बन सके।

किसी भी पूर्णमासी या शनिवार के दिन रात्रि 9.35 के बाद इस साधना को सम्पन्न करें, अपने सामने बाजोट रख लें उस पर लाल वस्त्र बिछाकर, चावल से स्वस्तिक बनाकर उसमें "**बलबाहु नृसिंह यंत्र**" स्थापित करें तथा यंत्र की चारों दिशाओं में "**चार ऊर्जास्वित् गुटिकाएं**" स्थापित कर दें, उसके बाद यंत्र और गुटिकाओं पर निम्न मंत्र बोलते हुए जल का छींटा दें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वा वस्थां गतोपि वा।
य स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।

इसके बाद यंत्र के मध्य में चारों गुटिकाओं पर केशर अथवा अष्टागंध का तिलक करें तथा धूप दीप दिखाकर पुष्प चढ़ावें। साधना काल तक घी का दीपक और अगरबत्ती जलते रहना चाहिए। साधना शुरू करने से पूर्व गुरु पूजन और गुरु मंत्र जप अवश्य करना चाहिए, इसके बाद निम्न मंत्र का लाल **हकीक माला** से 11 माला मंत्र जप करें।

॥ ॐ निं नृसिंहाय बलदाय महाबाहवे ह्रीं ॐ फट्॥

यह 11 दिन की साधना है, साधना समाप्ति के बाद गुटिकाओं को तथा माला को जल में प्रवाहित करें, यंत्र को अपने पूजा स्थान में लाल कपड़े में बांधकर 21 दिन स्थापित करें और 21 दिन तक उसके सामने धूप या अगरबत्ती जलावें। बाद में इसे भी जल में प्रवाहित करें, यह बल प्राप्ति का अद्भुत प्रयोग है। शारीरिक बल, वीर्य, ओज, तेज, कायाकल्प प्रदान करने के साथ-साथ अस्वस्थता को पूर्ण रूप से समाप्त करने के लिए यह अत्यन्त श्रेष्ठ साधना है।

स्वस्थ देह, स्वस्थ मन और स्वस्थ मन से गुरु चिंतन, गुरु चिंतन के साथ योगेश्वर कृष्ण चिंतन यही जीवन का आधार होना चाहिए।

साधना सामग्र पैकेट - 270/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆